ग्रन्थमाला 'आदर्श शिष्य' : खण्ड १

आदर्श शिष्य कैसे बनें ?

शिष्य वह है, जो गुरुको अपेक्षित साधना करे !

भूमिका

प्राथमिक अवस्थाके प्रत्येक साधकको यह ज्ञात रहता है कि 'गुरुके अतिरिक्त कोई तारनहार नहीं' तथा अगले चरणके साधकको इस बात का अनुभव रहता है । गुरुप्राप्तिके लिए निश्चितरूपसे क्या करना है, यह ज्ञात न होनेसे अनेक साधकोंका मात्र वर्तमान जन्म नहीं, अपितु आगे के अनेक जन्म व्यर्थ जाते हैं । ऐसे साधकोंको कुछ मार्गदर्शन मिले, इस दृष्टिसे यह ग्रन्थ लिखा है । गुरुप्राप्ति हेतु किसी आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत व्यक्तिको प्रसन्न करना आवश्यक है, जबकि अखण्ड गुरुकृपा हेतु निरन्तर गुरुको प्रसन्न करना आवश्यक है । इसका सुगम मार्ग है उनकी अपेक्षाके अनुरूप प्रयास करते रहना । उनकी एक ही अपेक्षा होती है – साधना । साधनाके आगेके चरणमें तन, मन, धन एवं प्राण भी श्री गुरु के चरणोंमें समर्पित करना आवश्यक है । यह चरण-प्रति-चरण करनेकी दृष्टिसे शिष्यमें कौनसे गुण आवश्यक हैं, गुरुके प्रति भाव कैसा होना चाहिए, गुरुबन्धुओंके साथ आचरण कैसा होना चाहिए, शिष्यकी जीवन -पद्धति कैसी होनी चाहिए इत्यादि का विस्तृत व्यावहारिक विवरण इस ग्रन्थमें प्रस्तुत है । गुरुकृपाका अर्थ क्या है तथा वह कैसे कार्य करती है, इसका भी विवरण प्रस्तुत ग्रन्थमें दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि प्रस्तुत ग्रन्थके मार्गदर्शनसे जिज्ञासुओं की साधकतक, साधकोंकी शिष्यतक तथा शिष्योंकी गुरुपदतक प्रगति हो ! – **संकलनकर्ता**

साधनासम्बन्धी मार्गदर्शक सनातनका ग्रन्थ

भावके प्रकार एवं जागृति

अनुक्रमणिका

卐 संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन ८

卐 आध्यात्मिक परिभाषामें वैशिष्ट्यपूर्ण प्रस्तावना ! ९

卐 भूमिका १२

१. व्याख्या एवं अर्थ १३

२. शिष्यत्वका महत्त्व १३

३. विद्यार्थी एवं शिष्य १४

४. माध्यम एवं शिष्य १४

५. साधक एवं शिष्य १५

६. गुरु-शिष्य सम्बन्ध १६

७. गुरुप्राप्ति १७

८. गुरुकृपा १९

९. कर्तव्य एवं गुरुऋण २५

१०. गुण (मुमुक्षुत्व, आज्ञाकारिता, नम्रता इत्यादि) २६

११. प्रकार ६३

११ अ. श्रेणी अनुसार (उत्तम, मध्यम एवं कनिष्ठ) ६३

११ आ. मर्यादा एवं पुष्टि भक्ति करनेवाले अन्तरंग शिष्य ६५

१२. गुरुके रूप एवं पूजन ६५

१३. गुरुके प्रति व्यवहार कैसा हो ? ६९

१४. शिष्यका जीवन ८५

१५. शिष्य एवं गुरुबन्धु ९०

१६. पति-पत्नीके एक ही गुरु होना ९२
१७. शिष्यकी परीक्षा ९२
१८. कुण्डलीके ग्रह, वार एवं गुरु ९३
१९. गुरुसे क्या मांगें ? ९३
२०. उन्नति किसपर निर्भर है ? ९४
२१. ईश्वरप्राप्तितक शिष्यका मार्गक्रमण ९६
२२. नए गुरु करना (गुरु बदलना) ९६
२३. अधोगतिके कारण १०३
२४. अनुभूति एवं उन्नतिके लक्षण - आध्यात्मिक उन्नतिके लक्षण १०४
卐 'शिष्य'सम्बन्धी गहन ज्ञान १११

स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया हेतु पूरक सनातनके ग्रन्थ !

अपने स्वभावदोष कैसे ढूंढें ?

- स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रियाकी व्याख्या
- स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रिया सम्बन्धी भ्रान्तियां एवं उनके कारण
- अपने दोष स्वयं ढूंढकर उन्हें चरण-प्रति-चरण दूर करनेकी प्रक्रिया
- स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रियामें सफलता पानेके लिए आवश्यक गुण एवं उपयोगी सूचनाएं

स्वसूचनाओंद्वारा स्वभावदोष-निर्मूलन

- स्वभावदोषोंपर उपचारी सूचनाएं
- स्वसूचनाकी रचनामें ध्यान रखनेयोग्य सूत्र
- स्वसूचनाके सन्दर्भमें टालनेयोग्य चूक
- स्वभावदोष-निर्मूलन प्रक्रियाके कारण साधकोंको हुए लाभ